श्रावण मास - 30 जुलाई 2026 से 28 अगस्त 2026

नास्ति गङ्गासमं तीर्थं नास्ति देवो हरोपमः।
श्रावणेन समो मासो न भूतो न भविष्यति।।

गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं, शिव के समान कोई देव नहीं और श्रावण मास के समान कोई सिद्धि प्राप्त का मास न हुआ है न होगा।

आत्मा में व्याप्त सद्गुरुदेव स्वरूप शिव

शिव का श्रवण : श्रावण मास

आषाढ़ीय पूर्णिमा अर्थात् गुरु पूर्णिमा के पश्चात् श्रावण मास प्रारम्भ होता है। 'श्रावण' शब्द 'श्रवण' से बना है, जब देवाधिदेव महादेव अपने भक्तों की पुकार सुनते है और साधक बाहरी कोलाहल से हटकर महादेव के समान ध्यानस्थ होकर अपने भीतर की दिव्य ध्वनि को सुनने का प्रयास करता है, आत्मा से जुड़ता है, स्वयं को खोजता है।

श्रावणे मासि यो भक्त्या शिवलिङ्गं प्रपूजयेत्।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते।।

श्रावण मास में भक्तिपूर्वक शिवलिङ्ग की पूजा करने से साधक पापों से मुक्त होकर शिवलोक को प्राप्त करता है। इस मास में की गई उपासना सामान्य दिनों की अपेक्षा अनेक गुना फलदायी मानी जाती है।

श्रावण मास का सम्बन्ध मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक प्रक्रिया से भी है। वर्षा ऋतु में प्रकृति शीतल होती है, धूल बैठ जाती है, वृक्षों में नवीन पत्तियां आती हैं, नदियां जल से भर जाती हैं। उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में भी यह समय आन्तरिक शुद्धि और नवीनता का प्रतीक है।

शिव का अर्थ ही कल्याण है, श्रावण मास हमें अपने भीतर के विकारों का शमन कर कल्याणमय बनने की प्रेरणा देते है। श्रावण मास केवल मांगने का समय नहीं, बल्कि स्वयं को बदलने का अवसर भी है, आत्मशुद्धि का पर्व है। शिव का अर्थ ही है जो कल्याण करे। अतः जो व्यक्ति अपने भीतर के अन्धकार को दूर कर प्रकाश की ओर बढ़ता है, वही वास्तविक रूप से श्रावण का पालन करता है।

श्रावण मास में विशेष रूप से सोमवार का महत्व है। सोमवार का सम्बन्ध चन्द्रमा से है और चन्द्रमा शिव के मस्तक पर सुशोभित है। चन्द्र मन का प्रतीक माना गया है, जब मन चंचल होता है, तब जीवन में अशान्ति, भ्रम और दुःख उत्पन्न होते हैं। शिवोपासना मन को स्थिर और शान्त बनाती है। श्रावण सोमवार अभिषेक, साधना-उपासना से मन की शुद्धि, इच्छाओं की पूर्ति और शिवकृपा प्राप्ति का श्रेष्ठ साधन माना गया है।

सोमः मनसो जातः।

शिव की आराधना करने से मन के दोष दूर होते हैं और मानसिक शान्ति प्राप्त होती है। श्रावण सोमवार शिव अभिषेक-साधना-उपासना द्वारा भीतर की आध्यात्मिक शक्ति के संचय मार्ग है। अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प।

श्रावण मास में शिवाभिषेक-साधना-उपासना का विशेष महत्व माना गया है। 'रुद्र' शिव का उग्र और शक्तिशाली स्वरूप है। मनुष्य दुःख, भय, रोग, शत्रुता और संकटों से मुक्ति चाहता है, तब रुद्राभिषेक सम्पन्न करता है। जल, दूध और मन्त्रों के माध्यम से किया गया अभिषेक केवल बाहरी अनुष्ठान नहीं, बल्कि चेतना की शुद्धि का माध्यम है।

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च।
नमः शङ्कराय च मयस्कराय च।।

निरन्तर अभिषेक, मंत्र-जप, मौन और प्रकृति के समीप रहना मन को गहरी शान्ति प्रदान करता है।

श्रावण मास – 30 जुलाई 2026 से 28 अगस्त 2026

श्रावण मास

रसेश्वर शिव साधना कल्प

प्रथम सोमवार – 03 अगस्त 2026 – बाधा हरण सिद्धि दिवस

द्वितीय सोमवार – 10 अगस्त 2026 – स्थायी लक्ष्मी सिद्धि दिवस

तृतीय सोमवार – 17 अगस्त 2026 – शत्रु बाधा निवारण सिद्धि दिवस

चतुर्थ सोमवार – 24 अगस्त 2026 – रसेश्वर शिव आनन्द सिद्धि दिवस

रसो वै सः। रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति।।

परम तत्व शिव रस के स्वरूप है और रसेश्वर शिव की साधना अराधना से ही जीवन में रस की प्राप्ति संभव है....

रस ही हमारे अस्तित्व, हमारे जीवन का, हमारी चेतना का मूल का स्वरूप है...

श्रावण मास – शिव मास – रसेश्वर मास

सद्गुरुदेव द्वारा वर्णित पूजन का यह विधान गृहस्थ शिष्यों-साधकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है। जिससे गृहस्थ साधक जीवन के इन चारों सोपानों का पान कर सकें।

इसी क्रम में इस बार श्रावण के चार सोमवार को जीवन की चार महत्वपूर्ण कामनाओं की पूर्ति हेतु साधना-पूजन सम्पन्न करें। पूजन-साधना की विशेष बातें –

- श्रावणमास में नियमित रूप से आगे वर्णित शिव पूजन विधान करना चाहिए।
- यदि नित्य यह पूजन संभव नहीं हो तो श्रावण में प्रत्येक सोमवार को यह पूजन अवश्य सम्पन्न करें।
- किसी कारण से सुबह पूजन नहीं कर सकते हैं तो रात्रि 8 बजे के बाद भी शिव पूजन, अभिषेक सम्पन्न किया जा सकता है।
- पहले श्रावण सोमवार को शिव साधना में जो साधना सामग्री प्रयुक्त की है, उसे ही प्रत्येक सोमवार को प्रयोग में लाना है।
- श्रावण में संभव हो तो नित्य प्रति शिव अभिषेक सम्पन्न करें। यदि आपके पास पारदेश्वर शिवलिंग अथवा कोई अन्य शिवलिंग है तो उस शिवलिंग का भी विशेष पूजन, रुद्राभिषेक सम्पन्न करें। रुद्राभिषेक में भी पूजन विधान यही सम्पन्न किया जाता है।

प्रत्येक सोमवार को संकल्प विनियोग अवश्य करें।

साधना में आवश्यक सामग्री

प्राण प्रतिष्ठित शिव यंत्र, पारद शिवलिंग, रुद्राक्ष माला, नवग्रह रस सिद्धि गुटिका।

उपरोक्त पैकेट के अलावा कुछ और सामग्री की आवश्यकता होती है, जिसकी पहले से ही व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

आसन किसी भी रंग का हो, जलपात्र, गंगाजल यदि हो तो, चांदी या स्टील की प्लेट, कुंकुम, रोली, चावल, केशर, पुष्प, बिल्वपत्र, पुष्पमाला, दूध, दही, घी, चीनी, शहद, नारियल, रक्तसूत्र या मौली अथवा कलावा, यज्ञोपवीत, अबीर, गुलाल, अगरबत्ती, कपूर, घी का दीपक, नैवेद्य हेतु दूध का प्रसाद, पांच फल, इलायची इत्यादि।

इसके अलावा यदि घर में तांबे का पंचपात्र, अर्ध्य पात्र, घण्टी, शंख, अगरबत्ती स्टेन्ड आदि हों तो उनकी व्यवस्था पहले से कर लें।

साधना विधान

स्नान कर शुद्ध सफेद रंग की धोती पहन कर पूर्व की ओर मुंह कर आसन पर बैठ जाएं और अपने सामने गुरु चित्र, विग्रह, गुरु यंत्र, गुरु पादुका जो आपके पूजा स्थान में स्थापित है उन्हें अपने सामने स्थापित कर पंचोपचार गुरु पूजन सम्पन्न कर, एक माला गुरु मंत्र का जप करें।

गुरु पूजन के पश्चात् बाजोट पर शिव चित्र स्थापित कर उसका तिलक कर, पुष्पमाला पहना दें। शिव चित्र के सम्मुख ही ताम्र पात्र में **'शिव यंत्र'** एवं **'नवग्रह रस सिद्धि गुटिका'** स्थापित कर अगरबत्ती एवं दीपक प्रज्वलित कर दें।

इस पूजन में यदि सम्भव हो तो अपनी पत्नी को भी अपने दाहिने हाथ की ओर आसन पर बिठा दें, फिर अपनी चोटी को गांठ लगावें अथवा वहां हाथ रखें। इसके पश्चात् बांये हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से अपने पूरे शरीर एवं सामग्री पर निम्न श्लोक पढ़ते हुए जल छिड़क दें –

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरं शुचिः।

इसके पश्चात् जल के कलश में गंगाजल, सिक्का डालकर। चावल की ढेरी बनाकर उस पर रख दें और उसके चारों तरफ कुंकुम या केशर की चार बिन्दियां लगा लें और उसमें निम्न मंत्र पढ़ते हुए जल भरें–

शिव का स्वरूप शिवलिंग

इसी अनादि सदाशिव - लिङ्ग और अनादि प्रकृति - योनि से समस्त सृष्टि उत्पन्न होती है। इसमें आधेय बीज - प्रदाता (लिङ्ग) और आधार बीज को धारण करने वाली (योनि) का संयोग आवश्यक है। इन दोनों के संयोग के बिना कुछ उत्पन्न नहीं हो सकता।

यह लिङ्ग-योनि जिसका व्यवहार श्री शिव-पूजा में होता है, प्रकृति और पुरुष के संयोग से होने वाली सृष्टि की उत्पत्ति का सूचक है। इस प्रकार यह परमात्मा जगत्पिता और दयामयी जगन्माता के आदिसम्बन्ध के भाव का द्योतक है। अतः यह परम पवित्र और मधुर भाव है।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन सन्निधिं कुरु।
पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्यास्सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि पूजाकाले सदा मम।।

फिर उस जल में से जल लेकर संकल्प करें –

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धेश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टा विंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बुद्वीपे भारतवर्षे (अपने शहर का नाम लें) *नगरे श्रावण मासे सोमवासरे मम* (अपना नाम व कामनाओं या इच्छाओं का नाम लें) *कामनां सिद्ध्यर्थं साधना करिष्ये।*

गणेश पूजन

फिर सामने स्टील या चांदी की प्लेट/थाली में कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर गणपति को स्थापित करें, यदि गणपति नहीं हों तो एक सुपारी रखकर उसे गणपति मानकर उस पर जल चढ़ाकर, पौंछकर, केशर लगाकर सामने नैवेद्य एवं फल रख दें, ऊपर पुष्प चढावें और फिर हाथ जोड़कर बोलें –

परं धाम परब्रह्म परेशं परमाद्भुतम्।
विघ्न निघ्न करं शातं गणेशं प्रणमाम्यहम।।
ॐ गणाधिपतये नमः।

नवग्रह पूजन

बाजोट पर ही चावल की नौ ढेरियां बनाकर प्रत्येक पर एक-एक सुपारी स्थापित कर दें। इसके पश्चात् निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए प्रत्येक सुपारी का पूजन कुंकुम एवं पुष्प से करें। तत्पश्चात् प्रत्येक मंत्र का 11-11 बार उच्च स्वर में उच्चारण करें -

सूर्य - *ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।*
चन्द्र - *ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।*
मंगल - *ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।*
बुध - *ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।*
गुरु - *ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।*
शुक्र - *ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।*
शनि - *ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।*
राहु - *ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।*
केतु - *ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।*

इसके पश्चात् शिव का मूल पूजन प्रारम्भ होता है।

शिव-यंत्र पूजन

ताम्र पात्र में स्थापित शिव यंत्र के ऊपर पारद शिवलिंग और नवग्रह गुटिका रख दें। फिर शुद्ध जल में थोड़ा सा कच्चा दूध और गंगाजल मिलाकर **'ॐ नमः शिवाय'** मन्त्र का उच्चारण करते हुए **'शिव यंत्र एवं नवग्रह रससिद्धि गुटिका'**, पर पतली धार से दुग्ध मिश्रित जल चढाते रहें।

इसके पश्चात् दूध, दही, घी, शहद, शक्कर का पंचामृत बनाकर उससे भी स्नान करावें, फिर शुद्ध जल से धो लें, फिर शुद्ध वस्त्र से पौंछ लें और अलग शुद्ध पात्र में स्थापित कर लें। तत्पश्चात् केसर और कुंकुम लगावें। फिर इन सभी पर धीरे-धीरे पुष्प की पंखुड़ियां डालते हुए निम्न मन्त्र पढ़कर उन्हें सिद्धि युक्त बनावें।

ॐ शिवाय नमः पादौ पूजयामि ।
ॐ जगत्पित्रे नमः जंघे पूजयामि।
ॐ मृडाय नमः जानुनी पूजयामि।
ॐ रुद्राय नमः उरु पूजयामि।
ॐ कालान्तकाय नमः कटिं पूजयामि।
ॐ नागेन्द्र भरणाय नमः नाभिं पूजयामि।
ॐ स्तव्याय नमः स्तनौ पूजयामि।
ॐ भावनाय नमः भुजान् पूजयामि।
ॐ कालकंठाय नमः कंठं पूजयामि।
ॐ महेशाय नमः सर्वाण्यंगानि पूजयामि।

शिवाभिषेक और पूजन के पश्चात् शिवयंत्र, शिवलिंग और नवग्रह गुटिका पर अबीर, गुलाल और अक्षत अर्पित करें तथा उन्हें पुष्प तथा पुष्पमाला समर्पित करें।

इसके पश्चात् 11 बार निम्न मंत्र का जप करें -

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

महामृत्युंजय मंत्र जप के पश्चात् 1 माला शिव पंचाक्षरी मंत्र की जप करें।

ॐ नमः शिवाय।।

तत्पश्चात अगरबत्ती व दीपक प्रज्वलित कर नैवेद्य और फल अर्पित करें तथा पश्चात् हाथ जोड़कर पाठ करें -

वन्दे देवउमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशुंनाम्पति।
वन्दे सूर्यशशांक वन्हिनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।

इस प्रकार अभिषेक-पूजन पूर्ण होता है। साधक को श्रावण के प्रत्येक सोमवार को अभिषेक - पूजन करना ही

''मन में बसें शिवाय...''

यह मन शिव के समान बड़ा ही भोला है। जितना इसके ऊपर बोझ डालोगे यह बोझ को धारण कर लेगा। धीरे-धीरे ऐसी स्थिति हो जायेगी कि मन ढूंढने पर भी नहीं मिलेगा।

मिलेगी तो केवल और केवल चिन्ताएं...

मन को स्निग्ध करो, इस मन पर रस पूर्ण प्रवाह करो। इस मन का अभिषेक करो...

यही शिवोऽहम् भाव है, यही शिव अभिषेक है।

- सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली।

है और प्रयास कर श्रावण के प्रत्येक दिन अभिषेक-पूजन करना चाहिये। श्रावण के प्रत्येक दिन अभिषेक-पूजन करने से साधक की मनोकामनाएं अवश्य ही पूर्ण होती है।

अभिषेक-पूजन की पूर्णता के पश्चात् श्रावण सोमवार के क्रमानुसार निम्न मंत्रों का जप सम्पन्न करें।

प्रथम सोमवार -
बाधा हरण सिद्धि दिवस (03 अगस्त 2026)

मैं (अमुक नाम, अमुक गौत्र) यह संकल्प लेता हूं कि मेरे जीवन में शिव और शक्ति को स्थापित करूंगा, जिससे मेरे जीवन की बाधाओं का हरण हो। मैं गुरु और देवताओं को साक्षी रखते हुए यह संकल्प करता हूं कि मैं बाधाओं के हरण हेतु दृढ़ संकल्पवान बनूं, मुझे शिव और शक्ति की असीम कृपा प्राप्त हो, यह पूजन और अभिषेक शिव को समर्पित है।

// ॐ ह्रौं जूं सः //

द्वितीय सोमवार -
स्थायी लक्ष्मी सिद्धि (10 अगस्त 2026)

मैं (अमुक नाम, गौत्र) संकल्प लेता हूं कि मुझे अपने जीवन में अर्थ की प्राप्ति हो, धन का अभाव समाप्त हो, शिव की शक्ति, लक्ष्मी मेरे जीवन में स्थायी बनी रहे। मैं पूर्ण रूप से ऋण-मुक्त होऊं। मेरा यह पूजन शिव एवं पार्वती को समर्पित है।

// कुबेर त्वं धनाधीश गृहे ते कमला स्थिता,
त्वं देवी प्रेषयाशु त्वं मम गृहे ते नमो नमः //

तृतीय सोमवार -
शत्रुबाधा निवारण सिद्धि दिवस (17 अगस्त 2026)

मैं (अमुक नाम, अमुक गौत्र) यह संकल्प लेता हूं कि अपने जीवन से शत्रु बाधा के निवारण हेतु शिव और शक्ति की कृपा हेतु प्रयत्नशील रहूंगा। अपनी शक्ति का उपयोग यश, सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्ति में करूंगा। जीवन से शत्रु बाधा समाप्त कर अपने कार्यों द्वारा समाज में श्रेष्ठ कार्य करूंगा। मैं अपने कार्यों द्वारा गुरु की सेवा सच्चे रूप में कर सकूं। आज का यह विशेष पूजन-अभिषेक आपको समर्पित है।

// ॐ हल्रौं हल्रौं हूं हूं महाकालाय फट् //

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रियायुधम्।
त्रिजन्मपापसंहारं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।

श्रावण मास में तीन दल वाला बेलपत्र तीन गुणों, तीन नेत्रों और तीन आयुधों वाले शिव का प्रतीक है। एक बेलपत्र अर्पित करने से तीन जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं।

चतुर्थ सोमवार -
रसेश्वर शिव आनन्द सिद्धि दिवस (24 अगस्त 2026)

हे! देवाधिदेव महादेव मैं (अमुक नाम, अमुक गौत्र) आज श्रावण मास के इस अंतिम सोमवार को यह संकल्प लेता हूं कि आप चन्द्रशेखर की कृपा मुझ पर सदैव बनी रहे। मेरे मन में शीतलता, शांति एवं संतोष हो। मेरे सभी चक्र जाग्रत हों, मैं भौतिक उन्नति के साथ आध्यात्मिक उन्नति के पथ पर गतिशील रहूं। आपकी कृपा से जीवन में परम आनन्द की प्राप्ति हो। मेरे सद्गुरुदेव की कृपा मुझ पर निरन्तर बनी रहे।

// ॐ साम्ब सदा शिवायै नमः //

प्रत्येक सोमवार को मंत्र जप करने के बाद यंत्र एवं गुटिका को अलग-अलग पात्र में रख देना चाहिए और श्रावण मास में नित्य इनके सामने सुबह-शाम अगरबत्ती व दीपक प्रज्वलित करना चाहिए तथा संभव हो तो *'ॐ नमः शिवाय'* मंत्र की एक माला जप करना चाहिए।

28 अगस्त 2026 को श्रावण पूर्णिमा है, अतः इस दिन इस सारी पूजन सामग्री को, जिस पर आपने चारों सोमवार विशेष मंत्र अनुष्ठान किया है, उसे पूजा स्थान में सफेद वस्त्र बिछा कर स्थापित करें और पुनः इनका एक बार संक्षिप्त पूजन करें और चारों सोमवार-मंत्रों की कम से कम एक-एक माला मंत्र जप करें। अपनी मनोकामना इच्छा पूर्ति की प्रार्थना करें और सभी सामग्री को उस दिन सायं किसी जल सरोवर में समर्पित कर दें।

भगवान शिव तो सर्वाधिक दयालु और तुरन्त वरदान देने वाले महादेव हैं, अतः इन साधनाओं का फल तुरन्त प्राप्त होता है, और साधक शीघ्र ही मनोवांछित सफलता प्राप्त करने में सफल हो पाता है।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-